विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०६/०९/ २०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

नाट्यांश:- (तत: प्रविशति प्रविशति प्रकृतिमाता)

(सस्नेहम)भो: भो: प्राणिन:।यूयं सर्वे एव मे सन्तति: ।कथं मिथ:कलहं कुर्वन्ति ।

वस्तुत: सर्वे वन्यजीविन:अन्योन्याश्रित: सदैव स्मरत।

ददाति प्रतिगृह्णाति ,गुह्यमाख्याति पृच्छति ।

भुङ्कते योजयते चैव षड्विधं प्रीति लक्षणम् ।।

(सर्वे प्राणिन: समवेत समवेतस्वरेण) मात:! कथयति तु भवती सर्वथा सम्यक्

परं वयं भवतीं न जानीम:।भवत्या: परिचय:क:?

शब्दार्था:-

समवेतस्वरेण- एक स्वर से ,सम्यक् – ठीक तरह से,मिथ:- आपस में

अर्थ- (उसके बाद प्रकृति माता प्रवेश करती है)

(प्रेम के साथ) अरे- अरे जीवों ! तुम सब ही मेरी सन्तानें हो आपस में क्यों झगड़ते हो ?

वास्तव में सभी जंगली जीव एक दूसरे पर आश्रित हैं।सदैव याद रखो –

जो देता ,लेता है,गुप्त बातें करता है अर्थात् सावधान करता है,

पूछता है,खाता है और (खाने के लिए)जोड़ता है।

ये छ: प्रकार के लक्षण (मित्र के लक्षण) हैं।

(सभी प्राणी एक स्वर से)

हे माता !आप तो पूरी तरह से ठीक कह रही हैं,परंतु हम तो आपको नहीं जानते हैं।

आपका परिचय क्या है।